साहित्यिक ऋषि—
रवीन्द्र



श्री सत्यभक्त
पूर्व सम्पादक 'चाँद' 'सतयुग' 'प्रणवीर'

युग निर्माण योजना मथुरा

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

SHRI CHANDUBHAI PATEL,
GONDAL, GUJARAT, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

साहित्यिक-ऋषि-रवीन्द्र

इङ्गलैण्ड में जाड़े का मौसम कितना कठिन और कष्टप्रद होता है इसे भुक्तभोगी जानते हैं। मोटे-मोटे ऊनी कपड़े लाद लेने पर भी शीत से पीछा नहीं छूटता। ऐसे ही एक दिन महाकवि रवीन्द्र लन्दन की एक सड़क पर जा रहे थे। चलते-चलते उन्होंने देखा कि मार्ग के पास ही एक व्यक्ति खड़ा है। उसके फटे जूतों में से उसके पैर दिखाई पड़ रहे थे क्योंकि उसके पास मोजे नहीं थे। कपड़ों की कमी से सीना भी कुछ खुला था। इङ्गलैण्ड में भीख माँगना कानूनन जुर्म माना जाता है, इसलिये उसने कुछ कहा तो नहीं पर एक क्षण के लिये अर्थपूर्ण दृष्टि से उसकी तरफ देखता रहा। रवि बाबू का हृदय उसकी दीनता पर द्रवित हो गया और उसके हाथ पर एक गिन्नी (सुवर्ण मुद्रा) रख कर आगे चल दिये। एक मिनिट बाद ही वह दौड़ता हुआ इनके पास आया और कहने लगा—"महोदय, आपने भूल से मुझे एक गिन्नी दे दी है।" यह कहकर वह उसे वापस करने लगा। जब रवि बाबू ने आश्वासन दिया तब वह उसे लेकर गया।

इस छोटी-सी घटना से जहाँ महाकवि की दयार्द्र प्रकृति का पता लगता है वहाँ यह भी विदित होता है कि इङ्गलैंड जैसे "रुपया परस्त" समझे जाने वाले देश के निवासी हम "संसार को नश्वर" कहने वाले लोगों की अपेक्षा कितने अधिक ईमानदार और सत्य-व्यवहार करने वाले हैं। एक गरीब भिखारी की तो बात क्या यहाँ के अधिकाँश सफेद पोश बाबू और धनी व्यक्ति भी भूल से किसी से कुछ अधिक पा जाँय तो उसे चुपके से जेब के हवाले करते हैं। इतना ही क्यों हमने प्रायः सेठ साहूकारों को तरकारी मण्डी में सौदा तुल जाने पर छोटी के बदले बड़ी चीज लेने का प्रयत्न करते देखा है। भाव-ताव और लेन-देन में झूँठे व्यवहार को यहाँ अधिकाँश व्यक्ति एक बुराई के बदले "चतुरता" समझते हैं। इतने पर भी हम अपने को संसार भर में सबसे अधिक धार्मिक और आदर्शवादी मानते हैं। इस दम्भ का कुछ ठिकाना है!'

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

रवि बाबू का यह अनुभव कुछ निराला नहीं था। एक अन्य अवसर पर उन्होंने जेब में छोटा सिक्का न होने पर स्टेशन के एक कुली को एक आने के बदले एक शिलिंग (१२ आना) दे दिया तो वह कुछ देर बाद उसे लौटाने आया, क्योंकि वह अपनी नियत मजदूरी के सिवाय और कुछ लेना बुरा समझता था। ऐसे ही अन्य अनेक, उदाहरण भारतीय सज्जनों के पढ़ने को मिलते हैं, जिनसे विदित होता है कि लेन-देन और व्यवहार में सत्यता का पालन करना इंगलैंड निवासियों का स्वभाव बन गया है, जब कि हमारे यहाँ बालकों को छोटे पन से ही ऐसी बातों में चालाकी और तिकड़म बर्तने की प्रेरणा दी जाती है। निस्सन्देह यह एक शोचनीय मनोवृत्ति है, और हमको इस सम्बन्ध में रवि बाबू के भ्रमण वृतान्त में वर्णित इन घटनाओ से शिक्षा ग्रहण करनी चाहिये।

इसी "भ्रमणवृतान्त" में एक और ध्यान देने योग्य बात रवीन्द्र नाथ का स्वदेशी प्रेम और भारतीय होने का गर्व अनुभव करना है। वैसे इनका ठाकुर परिवार हर तरह से "आधुनिक" था। इनके सबसे बड़े भाई सत्येन्द्र नाथ ठाकुर जो अहमदाबाद में जज थे, अंग्रेजीयत के इतने प्रेमी थे कि उनके स्त्री-बच्चे प्रायः इंगलैण्ड में ही रहते थे। उन्होंने रवीन्द्र को भी इसीलिये अपने पास बुला कर रखा था कि इंगलैंड-यात्रा के पहले अंग्रेजों का-सा रहन सहन सीख लें। पर बड़ी कोशिश करने पर इनमें कोई परिवर्तन न हो सका और ये उस १७ वर्ष की युवावस्था में इङ्गलैण्ड में भारतीय पोशाक में ही रहा करते थे। इस कारण अनेक बार उसकी असुविधा भी उठानी पड़ती थी और रास्ते में बीसियों लोग एक तमाशे की तरह उनको देखने के लिये दौड़-दौड़ कर आते थे। स्कूल के बालक तो उनकी खूब हँसी उड़ाते थे और कभी कोई उद्दण्ड लड़का चिल्लाकर कहता—'अरे, इस काले को देखो।' पर रवि बाबू ऐसी बातों से कभी संकुचित लज्जित नहीं हुए। उन्होंने इन सब असुविधाओं को सहन करके भी विलायती कोट, पेन्ट और टाई धारण करना स्वीकार न किया।

भारतवासियों में विदेशी शासन के प्रभाव से यह एक बड़ा दोष उत्पन्न

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

हो गया है कि वे अपनी पोशाक की अपेक्षा विदेशी पोशाक पहिनने में अधिक गौरव अनुभव करते हैं। अँगरेजी पेण्ट उठने-बैठने में कितनी असुविधाजनक होता है यह किसी से छिपा नहीं। टाई का पहिनना स्पष्ट ही निरर्थक और मूर्खता की-सी बात जान पड़ती है। फिर भी लोग बड़े शौक से इनका व्यवहार करते हैं। खास कर आजकल पेण्ट का व्यवहार तो नवयुवकों में इतना अधिक बढ़ गया है कि उतना अँगरेजी शासन काल में भी न था। तंग पेण्ट के पहिनने से टाँगें जैसी भद्दी, बाँस की तरह लम्बी लगने लगती हैं वह भी प्रत्यक्ष ही है। हम देखते हैं कि हमारे देश में जितने विदेशी पर्यटक आते हैं उनमें से कोई अपनी पोशाक को नहीं बदलता। अँगरेज हाकिम यहाँ पर बीस-बीस वर्ष रह जाते थे, पर सदैव अपनी भारी और चुस्त पोशाक ही पहिनते थे, चाहे वह यहाँ के गर्मी के मौसम में कष्टदायक ही सिद्ध होती थी। इसका कारण उनका जातीयता का ही भाव था। रवि बाबू ने भी इस तथ्य को समझा और इङ्गलैण्ड में बड़े-बड़े लोगों से मित्रता होने परभी उन्होंने भारतीय वेष भूषा में परिवर्तन नहीं किया।

जन्म और बाल्यावस्था –

ऐसे स्वदेश और साहित्य प्रेमी महाकवि रवीन्द्र नाथ ठाकुर का जन्म (सन् १८६१ से १९४१) कलकत्ता के भारत प्रसिद्ध ठाकुर वंश में हुआ था। ठाकुर का अर्थ हिन्दी प्रान्तों में क्षत्रियों से लिया जाता है। पर रवीन्द्र नाथ ब्राह्मण थे यद्यपि कुछ प्राचीनता वादी बादशाह जमाने की किसी घटना के आधार पर उनको "ब्राह्मण" मे हीन कहते थे। पर धन, मान, विद्या, पदवी सब बातों की दृष्टि से यह वंश बङ्गाल के सर्वोच्च घरानों में से एक समझा जाता था। रवीन्द्र नाथ के पिता महर्षि देवेन्द्र नाथ ठाकुर देश के एक माननीय धार्मिक और सामाजिक नेता थे और उनके सभी भाई बहुत ऊँचे पदों पर आसीन थे।

रवि बाबू के पिता प्रायः बाहर रहते थे और माता बीमार रहा करती थी, इसलिये इनकी देख भाल प्रायः नौकरों के ही जिम्मे रहती थी। घर का एक नौकर प्रायः इनको बैठाकर इनके चारों तरफ लकीर खींच देता और

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

इनसे कहता कि यदि तुम इस लकीर के बाहर पैर रखोगे तो बड़ी हानि उठाओगे। इस प्रकार इनको डरा कर वह बाजार चला जाता और बड़ी देर में लौट कर आता। रवीन्द्र को उस घेरे में बैठे-बैठे बड़ा कष्ट प्रतीत होता, पर अबोध होने के कारण वे उससे बाहर नहीं निकलते। फिर कुछ बड़े होने पर जब उनको स्कूल भेजा गया तो वहाँ भी शिक्षकों का कठोर शासन, डाँट-फटकार और धमकाते रहना ही दिखाई पड़ा था। घर में भी वे अपने चौदह भाई बहिनों में सबसे छोटे थे, इसलिये सबसे दबना पड़ता। इस परिस्थिति में उनका स्वभाव अन्तर्मुख होने लगा और वे कल्पना-लोक में विचरण करके मन को प्रसन्न करने की चेष्टा करने लगे। सम्भवतः इस परिस्थिति ने भी उनके भीतर निहित "कवि" को अपेक्षाकृत शीघ्र जाग्रत किया और १३ वर्ष की आयु से ही उनकी कविताएँ मासिक पत्रों में प्रकाशित होने लगीं।

ठाकुर परिवार के प्रयत्न से कलकत्ते में एक "हिन्दू-मेला" प्रचलित किया गया था। इसमें देश की बनी अनेक वस्तुओं और सूती, रेशमी वस्त्र आदि का प्रदर्शन होता था। अनेक कारीगर अपने गुण का परिचय देने को इसमें भाग लेते थे। सङ्गीत, कविता और साहित्य चर्चा भी होती थी। उसी छोटी आयु में एक बार उस अवसर पर आपने स्वदेशी-प्रेम के सम्बन्ध में बड़ी सुन्दर कविता पढ़ी। इसे जनता ने बहुत पसन्द किया और उसे अमृत बाजार पत्रिका में प्रकाशित भी किया गया।

रविबाबू के घर में प्रायः श्रेष्ठ लेखकों और कवियों का आना जाना लगा रहता था और साहित्य-गोष्ठियाँ होती रहती थीं। इससे कविता की तरफ इनकी जन्मजात रुचि और प्रतिभा निरन्तर विकसित होती रही। सन् १८७३ में उपनयन संस्कार होने के पश्चात् वे अपने पिता के साथ भ्रमण करने को हिमालय पर्वत पर गये। उस प्राकृतिक वातावरण में इनको जो प्रेरणा मिली उससे पर्वत जल स्रोतों के समान इनकी काव्य रचना का प्रवाह भी वेग से प्रभावित होने लगा। वे घण्टों पर्वत के सुरम्य स्थानों, वृक्षावली, फलों से भरे मैदानों, नदी, नालों के किनारे आनन्द के साथ घूमते रहते और किसी पेड़ के नीचे कविता लिखने बैठ जाते।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

पहाड़ पर से घर वापस आने पर भी उन्होंने अपना वही साहित्यिक क्रम बनाये रखा और भाई तथा घर वालों के आग्रह पर भी स्कूली पढ़ाई में मन नहीं लगाया। अवकाश के समय जब घर की स्त्रियाँ उनकी माता के कमरे में जमा होती तो वे एक ऊँचे स्थान पर बैठकर भ्रमण की घटनाओं को सुनाया करते। उसकी शैली एक कहानी के ढंग पर होती थी, जिससे सब उसे बड़ी रुचि के साथ सुनते थे। यहीं से उनमें कहानी लिखने की प्रवृत्ति का जन्म हुआ। बंकिम चन्द्र चटर्जी का "बंग दर्शन" मासिक पत्र उनको बहुत पसन्द था। विशेष रूप से उसके साहित्यिक निबन्ध और आलोचनाएँ उनको बहुत अच्छी लगती थीं। इनका प्रभाव उनके ऊपर स्थायी रहा और बहुत वर्षों बाद बंकिम बाबू का देहान्त हो जाने पर उन्होंने एक लेख में इसकी चर्चा करते हुए लिखा था—

"जिस दिन से बंकिम बाबू ने समालोचना करना छोड़ दिया, उस दिन से बँगला भाषा में कोई अच्छा समालोचक पैदा हुआ। बंकिम बाबू का स्थान आज तक इस दृष्टि से खाली ही पड़ा है। अभी तक उसका कोई अधिकारी पैदा नहीं हुआ। उनकी समालोचनाएँ बँगला-साहित्य में अराजकता नहीं फैलाने देती थीं।। बंकिम साहित्य-जगत् के राजा थे। आज साहित्य-सिंहासन के राजा के उठ जाने से हमारे साहित्य में गड़बड़ी फैली हुई है।"

इस प्रकार रवि बाबू की साहित्यक प्रवृत्तियाँ आरम्भिक जीवन में ही बढ़ती चली गई। उनके भाई श्री ज्योतीन्द्र नाथ ठाकुर "भारती" नामक मासिक पत्रिका प्रकाशित करने लगे। उसमें भी उन्होंने बहुत से विविध विषयक लेख प्रकाशित कराये। इसी में उन्होंने "भानुसिंहेर पदावली" नाम की कविता पुस्तक क्रमशः प्रकाशित कराई जो बाद में पुस्तक रूप में छपने पर हाथों हाथ बिक गई।

रवि बाबू का साहित्यिक-जीवन अनेक वर्तमान लेखकों को प्रेरणात्मक सिद्ध हो सकता है। उन्होंने दृढ़तापूर्वक साहित्य-साधना करके इस क्षेत्र में सफलता प्राप्त की। उनके घर वाले उनको एक बड़ा बैरिस्टर अथवा सरकारी अफसर बनाना चाहते थे, पर उन्होंने उन उच्च पदों की तरफ आकर्षित न हो

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

कर अपनी समस्त शक्ति साहित्य सेवा के लिये ही अर्पित कर दी। यह सच है कि उनको कुछ विशेष साधन प्राप्त थे, पर तब भी उन्होंने अपना लक्ष्य प्राप्त करने में पर्याप्त परिश्रम किया। आजकल अनेक व्यक्ति सामान्य प्रतिभा और साधनों के बल पर ही सुलेखक होने का स्वप्न देखा करते हैं और आश्चर्य यह कि वे इस उद्देश्य की पूर्ति के लिये उचित परिश्रम भी नहीं करना चाहते। उनकी इच्छा यही रहती है कि वे आरम्भ में ही जो कुछ भला बुरा लिखें वही छप जाये और उनकी प्रशंसा होने लगे। पर किसी भी कार्य में इस प्रकार थोथी इच्छाओं से सफलता नहीं मिल सकती। अगर वे रवि बाबू की तरह अपनी शक्तियों को लक्ष्य की पूर्ति में लगादें और उसके लिये आवश्यक परिश्रम और त्याग करें तो वे अवश्य सफल मनोरथ हो सकते हैं।

विलायत यात्रा और शिक्षा-

जब घर वालों ने देखा कि रवि बाबू यहाँ पढ़ने में मन नहीं लगाते तो उनको विलायत भेजने का प्रस्ताव किया गया जिससे वे बैरिस्टरी या कोई अन्य उच्च परीक्षा पास करलें। इंगलैण्ड के विद्यालय में उन्होंने अपनी योग्यता का अच्छा परिचय दिया जिससे वहाँ के प्रधानाचार्य सन्तुष्ट रहने लगे, पर उनका अधिक समय मिल्टन वायरन, टेनीसन, शैली आदि विख्यात अंगरेजी कवियों की रचनाओं के अध्ययन में ही जाता था। उन्होंने उसी समय इस सम्बन्ध में कई लेख भी "भारती" में प्रकाशित कराये।

योरोप में जाकर रवीन्द्र नाथ ने अपना समय केवल कालिज के भीतर ही नहीं लगाया वरन् वहाँ के सामाजिक और सार्वजनिक जीवन पर भी निगाह डालते और अपने देश के साथ उसकी तुलना करते रहते। यह सन् १८७६-८० की बात है जब भारतवर्ष का विदेशी संस्कृति से सम्पर्क होना आरम्भ हुआ था। इस विषय में उन्होंने अपने अनुभव का वर्णन करते हुए लिखा—

"योरोप की भूमि में यह मेरा पहला ही चरण है। आप तो जानते ही हैं कि मैं कैसा कल्पनाशील हूँ। मैंने सोचा था कि वहाँ पहुंचते ही एक अपूर्व दृश्य मेरी आखों को आकर्षित करेगा। परन्तु जैसा मैं लड़कपन में देखता

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org



चला आ रहा है कल्पना और वास्तविकता में प्रायः मेल नहीं होता। इस नवीन देश में आने से पहले मैंने उसे जिस नये रूप में सोच रखा था वह बात देखने में न आई। इंगलैण्ड आने पर सबसे अधिक मैंने क्या देखा? लोगों में व्यस्तता का भाव। जो लोग रास्ते में चलते हैं उनका मुँह देखने में बड़ा मजा आता है। बगल में छड़ी लेकर "हुश-हुश" करते वे चला करते हैं। आस-पास के आदमियों के ऊपर उनकी दृष्टि जरा भी नहीं पड़ती। उनके मुँह पर एक घबराहट सी झलकती रहती है। वे हृदय से यही प्रयत्न करते हैं कि कहीं उसका समय व्यर्थ न बीत जाय। इस देश के लोगों का स्वभाव "दुलारा-लड़का" बनने का नहीं है, और न आराम से गद्दी पर पड़े रहना किसी को अच्छा लगता है।"

जब वे पेरिस गये तो वहाँ का आडम्बर पूर्ण जीवन उनको बड़ा अट-पटा जान पड़ा उन्होंने लिखा—"यह एक सुहावना नगर है। मालूम पड़ता है मानो यहाँ कोई मनुष्य निर्धन है ही नहीं। मैंने सोचा कि तीन हाथ के मनुष्य लिये इतने बड़े और सुसज्जित मकानों की क्या आवश्यकता है? मैं एक होटल में जाकर ठहरा। उसके सभी कमरे इतने बड़े थे कि ढीला कपड़ा पहिनने में जैसी असुविधा होती है, वैसी ही असुविधा मुझे इस होटल में जान पड़ने लगी। उस मकान के विस्तार का कोई ठिकाना न था। फाटक, दालान, बगीचा अटारी, पत्थर के मार्ग, गाड़ी और आदमियों का कोलाहल देखकर मैं दंग रह गया घोड़ा।"

महाकवि रवीन्द्र भारत के शान्त वातावरण के अभ्यस्त थे। एक कवि के रूप मे उनको प्रकृति की गोद में एकान्त चिन्तन और मनन प्रिय था। इस लिये ऐसे व्यस्तता और हलचल पूर्ण स्थान अगर उनको अपनी रुचि के प्रति-कूल प्रतीत हों तो कोई आश्चय नहीं। फिर भी हम जीवन के किसी एक पक्ष का ही अधिकाधिक विकसित होते रहना प्रशंसनीय नहीं समझते। योरोप वालों की उद्योग शीलता निस्सन्देह अनुकरणीय है, इसी से वे संसार में अपनी प्रधान-ता स्थापित करने में सफल हुए हैं। भारतवासियों में इस गुण की कमी है। प्रकृति के उदार और चित्तवृत्ति में सन्तोषी होने से वे प्रायः आलस्य और शिथि-

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

लता का जीवन व्यतीत करने लग जाते हैं। इस दृष्टि से योरोप वालों से वे शिक्षा ग्रहण कर सकते हैं।

पर उस उद्योग के परिणाम को अधिकतर शान शौकत और बाह्य आडम्बर में व्यय कर देने के हम पक्षपाती नहीं। मनुष्य यदि अधिक उपार्जन कर सकता है तो यह आवश्यक नहीं कि वह अधिक उपभोग भी करे 'अगर भगवान् ने हमको अधिक योग्यता और कार्य शक्ति दी है तो उसका लाभ कम विकसित शक्ति वाले अन्य मानवों की प्रगति में ही किया जाना चाहिये। यद्यपि रवि बाबू को शाही होटल में दो चार दिन ठहरनेसे वहाँ कोई निर्धन न दिखाई दिया, पर हम जानते हैं कि पेरिस और लन्दन जैसे महानगरों के भीतर और आस-पास लाखों व्यक्ति ऐसे रहते हैं जिनका जीवन अभाव ग्रस्त होता है और जिनके बच्चों को भर पेट भोजन और पर्याप्त वस्त्र नहीं मिलते। अगर व्यक्ति और समाज की समृद्धि बढ़ती है तो उसका उपयोग सबसे पहले समाज के इस दुर्भाग्य ग्रस्त समुदाय की दशा सुधारने में ही किया जाना चाहिये।

हमारे देश में तो स्थिति और भी भयंकर पाई जाती है। यहाँ किसी भी जगह भूखे और नंगों की टोलियाँ देखी जा सकती हैं। गरीब बालकों को ठण्ड से ठिठुरने पर भी सामान्य वस्त्र नहीं मिलते। आहार में पौष्टिक तत्त्वों का अभाव रहता है। घर के नाम पर उनको टूटे-फूटे और अस्वास्थ्यकर झोंपड़ों में रहना पड़ता है। उधर अमीरों के नये-नये मकान और कोठियाँ खड़ी हो जाती हैं। वे ब्याह शादियों में लाखों रुपया फूँक देते हैं। यह स्थिति अवश्य ही बदली जानी चाहिए, तभी हम सच्ची प्रगति के दर्शन कर सकेंगे।

बैल गाड़ी द्वारा देश-भ्रमण

पर रवि बाबू गरीबों की उपर्युक्त स्थिति से अनजान नहीं थे और अपनी विशाल सहृदयता के कारण उसमें हर तरह से सहायता करने को प्रस्तुत रहते थे। जब कभी ऐसा अवसर आ जाता था, वे किसी तरह के हानि लाभ की चिन्ता छोड़ कर कर्म क्षेत्र में खड़े हो जाते थे। जब वे विलायत से

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

भारत वर्ष लौट आये तो देश के गरीबों की स्थिति का निरीक्षण करने के लिए कलकत्ते से पेशावर तक बैल गाड़ी में यात्रा करने का निश्चय किया। इस यात्रा का वर्णन करते हुए उनके एक जीवन चरित्र में कहा गया है—

"मार्ग में उनको अनगिनत गाँव और दीन कृषकों की झोंपड़ियाँ देखने का अवसर प्राप्त हुआ। उन्होंने देखा कि तरह-तरह के कष्टों में फटे-पुराने चिथड़े लपेटे हुये उनका जीवन व्यतीत होता है। गरीबों की दुर्दशा देख कर इनका चित्त दुखी हो गया। वे सोचने लगे कि पंखों के नीचे सोने वाले अमीरों को क्या पता कि गरीबी कैसी होती है। इन दृश्यों को देख कर जो विचार मंथन हुआ उससे इन लोगों की दशा सुधारने के कितने ही उपाय उनको सूझे। जैसे कि ग्रामों में पंचायतें बननी चाहिये जो अपने गाँव के सुख-दुख को समझकर उचित प्रबन्ध कर सकें। वायु रहित तंग कोठरियों में पशुओं के साथ बेढंगा जीवन व्यतीत करने वाले किसानों की अवस्था को महलों में निवास करने वाले धनी किस प्रकार समझ सकते हैं? वे तो गरीबों का खून चूसना और खस की टट्टियों में आराम से रहना जानते हैं। उन्होंने देखा कि ग्रामों में शिक्षा का बड़ा अभाव है। पेट पालने के लिये छोटी अवस्था में ही बालकों को मजदूरी करनी पड़ती है। धनाभाव से वे प्रायः अशिक्षित रह जाते हैं।" इस प्रकार समस्त देश के किसानों की दशा को स्वयं देखकर उन्होंने अपनी रचनाओं में उसका यथार्थ चित्रण किया जिससे शिक्षित देश वासियों की आँखें खुल गई। उन्होंने इन आवश्यकताओं की तरफ सरकार का भी ध्यान आकर्षित किया जिससे फल स्वरूप अनेक गांवों में विद्यालय स्थापित किये गये और किसानों के लिये नहर तथा कुँओं द्वारा सिंचाई की सुविधाओं में वृद्धि की गई।

इस प्रकार रवीन्द्र नाथ ने एक ऐसा कार्य सम्पन्न किया जिसे प्राचीन समय से सभी सन्त महात्मा करते आये हैं। भारतवर्ष में तीर्थ-यात्रा की सार्वजनिक प्रणाली पाई जाती है और सन्त-महात्माओं के लिये तो यह एक आवश्यक नियम माना गया है कि वे एक बार 'चारों धाम' की यात्रा कर आयें। इसका आशय यही है कि वे एक बार समस्त देश का भ्रमण करके समाज की दशा की अच्छी तरह जानकारी प्राप्त करले और फिर अपनी शक्ति और साधन

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

के अनुसार उसकी प्रगति के मार्ग सोचें और तदनुसार कार्य करें । शंकराचार्य, चैतन्य, नानक, नामदेव, ज्ञानेश्वर, गो०तुलसीदास, समर्थगुरु रामदास, तुकाराम आदि धर्म तथा समाज के सभी प्रमुख सूत्रधारों ने इसी मार्ग का अनुसरण किया था । उस युग में यात्रा के साधन बहुत अल्प और श्रम साध्य थे । इसलिए इन सब दे साधु रूप से पैदल ही यात्रा की थी ।

रवीन्द्र नाथ ने भी देश समाज की दशा का अध्ययन करने के लिये वही मार्ग अपनाया । उस समय रेलगाड़ी चल निकली थी, पर रेल-यात्रा से पिछड़े हुए गावों और भूखे-नंगे षकों की अवस्था का क्या पता लग सकता है ? वर्तमान परिस्थिति और अपनी सामाजिक स्थिति के कारण रवीन्द्र नाथ पैदल यात्रा नहीं कर सकते थे, इस लिये उन्होंने इसी से मिलता-जुलता साधन बैल-गाड़ी द्वारा यात्रा करने का अपनाया । इससे उन्होंने जो अनुभव प्राप्त किया वह निस्सन्देह अमूल्य था और यह स्वीकार करना पड़ेगा कि इस प्रकार वे समाज की अच्छी सेवा कर सके । आज भी मोटरों में यात्रा करने वाले 'नेता' अगर एकाध वर्ष इस प्रकार पैदल या बैलगाड़ी द्वारा देश भ्रमण करके ज्ञान को परिपक्व कर लिया करें, तो वे वर्तमान समय की अपेक्षा बहुत अधिक ठोस सेवा कर सकने में समर्थ हो सकेंगे इसमें सन्देह नहीं ।

"बंग-दर्शन" का प्रकाशन

श्री० बंकिम चन्द्र चटर्जी द्वारा संचालित जिस 'बंग दर्शन' मासिक पत्र का ऊपर जिक्र किया जा चुका है, वह उनके देहान्त के पश्चात् बन्द हो गया था । रवीन्द्र नाथ ने उसके महत्व और आवश्यकता को समझ कर सन् १९०१ में उसे पुनः प्रकाशित करना आरम्भ किया । सत्साहित्य द्वारा सामाजिक प्रगति का एक प्रधान साधन तो था ही, पर रवि बाबू उसके माध्यम से राजनीतिक अन्याय के विरुद्ध भी आवाज उठाया करते थे । सन् १८९९ में दक्षिण अफ्रीकी निवासी गोरों ने वहाँ की बोअर जाति का विध्वंस करना आरम्भ किया । वे एशियाई जातियों के साथ भी बहुत हीनता का व्यवहार करते थे । रवि बाबू ने उस अवसर पर गोरों के इस स्वार्थ मूलक कार्य को घृणित बतला

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कर उसके विरोध में कई लेख 'बंगदर्शन' में लिखे थे। इसी मासिक-पत्र में महाकवि की कितनी ही रचनायें क्रमशः प्रकाशित हुई थीं। इन्हीं रचनाओं में से एक 'चोखेरवाली' है जिसका अनुवाद हिन्दी में 'आँख की किरकिरी' के नाम से हो चुका है। इस उपन्यास ने बंगला साहित्य में एक नया आदर्श उपस्थित किया इससे पहले अधिकांश उपन्यास घटना-प्रधान होते थे, पर इसमें रवि बाबू ने बहुत कम घटनायें देकर मनोविश्लेषण और अन्तर्द्वन्द को प्रधानता दी थी।

साहित्य भी सामाजिक जागृति और सुधार का एक बहुत बड़ा माध्यम है। जो लोग इसे केवल मनोरंजन या दिमागी ऐयाशी का साधन मानते हैं, वे इसके वास्तविक महत्त्व से अनजान हैं। वे 'रसज्ञ व्यक्तियों' और राजा-रईसों के प्रशंसक माने जा सकते है, पर सच्चे साहित्यकों में उनकी गणना नहीं हो सकती। साहित्य का पहला लक्षण लोक-कल्याण है। जिस रचना से समाज या व्यक्तियों को किसी प्रकार की उच्च प्रेरणा प्राप्त नहीं होती, और वे अपने अन्य अभावग्रस्त बंधुओं और समाज की सेवा के लिये उद्यत नहीं हो जाते, उसे 'सत्साहित्य' नहीं कहा जा सकता।

रवि बाबू की समस्त साहित्यिक कृतियाँ, चाहे वे कविता हों या उपन्यास, कहानी, निबन्ध आदि, इसी उद्देश्य से लिखी गई हैं कि उनसे मनुष्यों का मानसिक स्तर उच्च हो और वे निम्न प्रवृत्तियों का त्याग कर समाज के उपयोगी सदस्य बन सकें। उनकी "जन-गन-मन अधिनायक" वाली कविता तो देश प्रेम की सच्ची अनुभूति का भण्डार होने के कारण राष्ट्रीय गीत के रूप में स्वीकार करली गई है। 'अन्तर मम विकसित कर हे' शीर्षक कविता महात्मा गाँधी के आश्रम में प्रार्थना के समय नित्यप्रति गाई जाती थी। उसमें अध्यात्म भावना को थोड़े से शब्दों में इतने प्रभावोत्पादक रूप में व्यक्त किया गया है कि श्रोता मन्त्रमुग्ध हो जाते हैं। इसी प्रकार उनके उपन्यास सामाजिक कुरीतियों तथा मानवीय त्रुटियों को दूर करके उच्च जीवन मार्ग पर चलने की प्रेरणा देने वाले हैं। भारतीय साहित्यिकों के लिये महाकवि रवीन्द्रनाथ निश्चय ही आदर्शस्वरूप हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

स्वदेशी समाज की स्थापना

सन् १९०५ का वर्ष बंगाल के लिये ही नहीं समस्त भारत के लिये एक नवीन युग के प्रवेश द्वार के समान था। उस समय देश पर लार्ड कर्जन का कूटनीतिपूर्ण शासन चल रहा था। वे जबसे भारत के वाइसराय बनकर आये थे, बराबर जन-जागृति को दबाने की तरकीबें कर रहे थे। भारतवासियों की स्वाधीनता की भावनाओं से उनको चिढ़ थी। इसलिये उन्होंने अन्तिम प्रहार यह किया कि १६ अक्टूबर १९०५ को बंगाल को दो भागों में बाँटने की आज्ञा दे दी। बंगाल के नेता इसका विरोध आरम्भ से ही कर रहे थे और श्री रवीन्द्र ने सन् १९०४ में ही इसका प्रतिकार करने के लिये एक स्वदेशी-समाज' की स्थापना कर दी थी। इसके सदस्य प्रतिज्ञा करते थे कि वे स्वदेशी वस्तुओं का ही प्रयोग करेंगे। इतना ही नही शिक्षा, दीक्षा, साहित्य, समाज आदि सभी विषयों में 'निजत्व' की भावना को ही प्रधानता देंगे।

यह संस्था बहुत शीघ्र सुदृढ़ होकर समस्त प्रान्त में फैल गई और हजारों व्यक्ति उसमें सम्मिलित होने लगे। पर जब 'बंग-भंग' के विरुद्ध किया गया सब आंदोलन, विरोध और प्रार्थनायें आदि असफल सिद्ध हो गये, तो लोगों ने १६ अक्टूबर को सरकारी आदेश के प्रचारित होते ही भारत की राजधानी कलकत्ता में एक विशाल जलूस निकाला, जिसके प्रधान संचालक महाकवि श्री रवीन्द्र ही थे। वह जलूस महाकवि का "विधिर बन्धन काटिवे तुमि एमनि शक्तिमान" (क्या तुम ऐसे शक्तिशाली हो कि विधाता द्वारा निर्मित सम्बन्ध का भी विच्छेद कर दोगे?) गीत गाता हुआ समस्त नगर में घूमा और लाखों व्यक्तियों ने गंगा स्नान करके परस्पर राखी बाँधकर यह प्रतिज्ञा की कि ऐसे अन्यायपूर्ण आदेश को कदापि स्वीकार न किया जायगा।

स्वदेशी की भावना ने थोड़े ही समय में इतनी जड़ जमा ली कि देश का वस्त्र-व्यवसाय और अनेकों उद्योग-धन्धे पनपने लग गये और विलायती माल का आयात दिन पर दिन कम होने लगा। स्वदेशी स्कूल, स्वदेशी कालेज, स्वदेशी बैंक, स्वदेशी नेशनल फण्ड आदि की धूम मच गई और लोगों में स्वा-

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

जीनता की एक नई ही भावना फूट पड़ी। अँगरेज अधिकारियों ने तो यह कार्य भारतवासियों में फूट उत्पन्न करके उन्हें निर्बल बनाने के उद्देश्य से किया था पर परिणाम उलटा निकला। उसी दिन से जनता में जो नई चेतना उत्पन्न हुई और राजनैतिक आंदोलन छेड़ा गया वह अन्त में भारत को विदेशियों के पंजे से मुक्त कराके ही समाप्त हुआ।

वास्तव में स्वदेशी का मंत्र केवल किसी सामयिक आंदोलन से सम्बन्धित नहीं, वरन् यह मानव-जीवन को सुखी बनाने का राजमार्ग है। इसका असली तात्पर्य है—स्वावलम्बी होना। जो लोग इसे संकीर्णता का चिन्ह समझते हैं, या इसका आधार किसी से द्वेष करना मानते हैं, वे भूलते हैं। 'स्वदेशी' का अर्थ है जीवन को सरल तथा आडम्बरशून्य बनाना। हम अपने जीवन-निर्वाह की सामान्य आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये जितने कम परा-धित होंगे उतना ही हमारा जीवन सुखी हो सकता है। जो लोग प्रातःकाल उठते ही अपने नाश्ते के लिये दिल्ली की बनी डबल रोटी और डेनमार्क से आया मक्खन चाहते हैं और उसी के अभ्यस्त हो गये हैं, उनको समय-समय पर असुविधा उठानी पड़े तो क्या आश्चर्य है? जो ग्रामीण अपने घर में तैयार होने वाली मोटी रोटी और छाछ को खाकर खेतों में परिश्रम करने को चल देता है, उसके लिये वैसा अवसर कदाचित ही कभी आये।

महात्मा गाँधी ने इसी सिद्धान्त को समझकर लोगों से 'खद्दर' व्यवहार की प्रतिज्ञा करने को कहा था। उनका आशय यही था कि जीवन की दो सबसे बड़ी और दैनिक आवश्यकताएँ—भोजन और वस्त्र के सम्बन्ध में मनुष्य पूर्ण स्वावलम्बी हो सके तो उसके कष्टों तथा परेशानियों का बहुत कुछ अन्त हो सकता है। हम जानते हैं कि महात्मा जी का उपदेश, इस विषय में एक सर्वोच्च आदर्श की भांति था, और प्रत्येक व्यक्ति उसे पूरी तरह पालन नहीं कर सकता। तो भी एक मार्ग-दर्शन के रूप में उसे स्वीकार करना कल्याण-कारी ही माना जायगा। लोकमान्य तिलक ने भी स्वदेशी की महिमा को बहुत पहले ही समझ लिया था ओर बीसवीं शताब्दी आरम्भ होने से कई वर्ष पूर्व पूना में स्वदेशी आन्दोलन आरम्भ किया था। इससे हम समझ सकते

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org



हैं कि भारत के मूर्धन्य विद्वानों तथा जन-नेताओं ने भारतीय जनता की आर्थिक अवस्था के सुधार के लिये आरम्भ से ही स्वदेशी व्यवहार की प्रेरणा दी थी। महाकवि रवीन्द्र ने भी इस तथ्य को अपनी दिव्य दृष्टि से शीघ्र ही जान लिया था और भारतीय समाज को स्वावलम्बी बनाने के लिये ही "स्वदेशी-समाज" जैसी संस्था की कल्पना की थी। पर जब उसमें एक तीव्र आन्दोलन का समावेश हो गया और उसने क्षणिक उग्रता तथा हिंसा का रूप ग्रहण कर लिया तो वे उस 'आन्दोलन' से पृथक हो गये, और उसका संचालन अन्य नेताओं के लिये छोड़ दिया। उनकी कवि-प्रकृति इसके अनुकूल न थी।

शान्ति निकेतन की स्थापना—

रवि बाबू का 'ठाकुर' वंश स्वयं एक बड़ी जमींदारी का मालिक था और उसकी देखभाल करने के लिये उनको युवावस्था से ही समय-समय पर अपने 'शैलाइदह' गांव में रहना पड़ता था। यहीं से उनको ग्रामीण जीवन का परिचय हुआ और दरिद्रता की मूर्ति तथा अभावों के बीच ही पलने वाले किसानों की दुर्दशा अपनी आँखों से देखने को मिली। इस अनुभव से प्रभावित होकर उन्होंने जो पत्र अपने मित्रों तथा स्वजनों को लिखे थे उनमें निरीह ग्रामीण की दरिद्रता का बड़ा ही करुणाजनक चित्र खींचा गया है। उन्होंने एक ऐसे पत्र में लिखा था—

"वे भोले-भाले किसान ! वे ईश्वर के निस्सहाय शिशु ! मैं नहीं जानता कि सम्पत्ति के समान वितरण वाला साम्यवादी सिद्धांत यहाँ व्यवहार में लाया जा सकता है या नहीं ? पर यदि ऐसा सम्भव नहीं हो सकता तो सचमुच यह बड़ा कठोर विधान है, और मानव उसके हाथों अत्यन्त दुःखी और असहाय रह जाता है।"

पर श्री रवीन्द्र केवल कल्पना में उड़ने वाले कवि न थे। वे सहानुभूति के दिखावटी आँसू बहाकर ही अपने हृदय को सान्त्वना देने वाले जीव नहीं थे। उन्होंने अपने इन 'अन्नदाताओं' की समस्या पर खूब विचार किया और निश्चय किया कि उनकी दुर्दशा का एक बड़ा कारण उनकी अविद्या और

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अशिक्षा भी है। पर वर्तमान समय के स्कूल और कालिजों की खर्चीली और 'पुस्तकीय' शिक्षा न तो उनके लिये सम्भव हैं और न विशेष कल्याणकारी सिद्ध हो सकती है।

बहुत कुछ विचार करके वे इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि भारतीय किसानों की शिक्षा,समस्या को हल करने के लिये यहाँ ऋषियों की प्राचीन गुरुकुल-प्रणाली ही फलप्रद सिद्ध हो सकती है, जिसमें कम से कम व्यय में व्यवहारिक ज्ञान प्रदान किया जाता था। उसमें गुरु और शिष्य एक दूसरे के इतने अधिक निकट रहते हैं और उनके जीवन में ऐसा 'साम्य' पाया जाता है कि वे परस्पर सच्चे शुभचिन्तक बने रह ही नहीं सकते। उस प्रणाली की तुलना वर्तमान शहरी स्कूलों से नहीं की जा सकती जहाँ 'गुरु और शिष्यों' का कुछ घण्टों के लिये अनिश्चित मिलन हो जाता है और वे एक दूसरे को प्रसन्नतादायक होने के बजाय 'भार स्वरूप' जान पड़ते हैं।

इस उद्देश्य को सम्मुख रखकर उन्होंने शैलाइदह का निवास छोड़कर 'बोलपुर' को अपना केन्द्र बनाया जहाँ उनके पिता देवेन्द्रनाथ ठाकुर ने बहुत वर्षों पहले एक 'साधना कुटीर' बनाई थी। यह एक एकान्त स्थान है जहाँ की वन-सुषमा और प्राकृतिक जलाशय आदि मनुष्य को आधुनिक कृत्रिमता से दूर ले जाते है। यहीं पर उन्होंने सन् १९०१ के लगभग दो छात्र दो अध्यापकों को लेकर इस संस्था का श्रीगणेश किया। अनेक लोग तो इसे 'नाम बड़ा और दर्शन थोड़ा" वाला मामला समझकर हँसी करने लगे, पर श्री रवीन्द्र और उनकी सहधर्मिणी मृणालिनी देवी उसकी व्यवस्था में आन्तरिक निष्ठा से लगे हुए थे। कुछ ही समय में छात्रों की संख्या यथेष्ट हो गई और कार्यभार तथा अर्थव्यय भी काफी बढ़ गया। रवि बाबू को जो कुछ रुपया घर से मिलता था उसका एक बड़ा अंश इसी में लग जाता था, फिर भी खर्च पूरा नहीं पड़ता था। तब मृणालिनी देवी ने अपने आभूषण बेचकर उसका खर्च चलाया और जब उससे भी काम न चला तो श्री रवीन्द्र ने अपना एक निजी मकान और बहुत-सी पुस्तकें बेच डालीं। इस प्रकार दृढ़ संकल्प करके उन्होंने इस संस्था को चलाया। बीच-बीच में इस पर कठिन अर्थ-संकट आते रहे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

जिनका निवारण महाकवि ने अपूर्व कर्मवीरता और परिश्रम से किया, और लोगों को दिखा दिया कि वे कोरे कवि ही नहीं हैं, वरन् भगवान कृष्ण के अनुयायी एक सच्चे 'कर्मयोगी' भी हैं।

सच पूछा जाय तो महाकवि ने अपना सर्वस्व इसी संस्था को अर्पित कर दिया। अपनी अपार योग्यता और विश्वव्यापी ख्याति के द्वारा 'नोबल पुरस्कार' और अन्य देशों के भ्रमण आदि से जितना भी धन प्राप्त हुआ, वह सब उसी में लगाया गया। समय आने पर इसी संस्था के अन्तर्गत 'विश्व-भारती' का निर्माण किया गया। उसमें विदेशों के शिक्षार्थी उसी प्रकार आकर सच्चा ज्ञान प्राप्त करने लगे जिस प्रकार प्राचीन काल में तक्षशिला और नालन्दा आदि के विद्यालयों में संसार भर के विद्यार्थी आकर भारतीय ज्ञानामृत से अपनी आत्मा को परिपुष्ट करते थे। पं० जवाहरलाल नेहरू ने इस संस्था के सम्बन्ध में ठीक ही कहा था—"जिसने शान्ति निकेतन को नहीं देखा उसने हिन्दुस्तानी को ही नहीं देखा।"

विश्व-भ्रमण और भारतीय संस्कृति का प्रचार—

महाकवि रवीन्द्रनाथ ने अपनी रचनाओं द्वारा संसार में भारतीय-संस्कृति का जो मान बढ़ाया वह भी उनकी एक महत्वपूर्ण सेवा है। अँगरेजों ने हमारे देश को अपने अधीन करके केवल उसका आर्थिक शोषण ही नहीं किया था वरन् वे उसकी सभ्यता तथा संस्कृति को अत्यन्त हीन साबित करके संसार को यह भी बतलाना चाहते थे कि वे भारत-शासन करके इन लोगों को 'सभ्य' बना रहे हैं। पर जिस समय महाकवि डेनमार्क की 'सहकारी शिक्षण पद्धति' का अध्यन करने के उद्देश्य से इङ्गलैण्ड पहुँचे और नहां उन्होंने अपनी 'गीताञ्जलि' की कुछ कविताओं का अनुवाद श्रेष्ठ अँगरेज साहित्यकारों और कलाकारों को सुनाया तो विद्वानों में उनके नाम की धूम मच गई। तत्कालीन प्रसिद्ध अँगरेज कवि यीट्स के आग्रह पर "इण्डिया सोसायटी" ने "गीताँजलि" का अँगरेजी अनुवाद पुस्तकाकार सन् १९१२ में प्रकाशित किया। उसके आध्यात्मिक भावों की उच्चता और काव्य-सौन्दर्य से लोग इतने आकर्षित

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

हुए कि सैकड़ों की संख्या में उनके दर्शनों को आने लगे और जगह-जगह उनके सम्मान में समारोह होने लगे। "गीताञ्जलि" का सारांश एक लेखक के शब्दों में इस प्रकार प्रकट किया जा सकता है—

"गीतांजलि" में वैष्णव कवियों की प्रेम-भावना का अनुपम परिचय दिया गया है। साथ ही उसमें उपनिषदों के सर्वोच्च आध्यात्मिक विचारों का भी बड़ी मार्मिकता से समावेश है। कवि का यह अनूठा ग्रन्थ आध्यात्मिक गगन पर ज्ञान-सूर्य बनकर उदित हुआ है, जिसकी निर्मल ज्योति का प्रकाश समस्त विश्व का हृदय आलोकित कर रहा है। कवि लिखता है—प्रभु की निकटता पाने के लिये बाह्य जप-तप-योग और वैराग्य की आवश्यकता नहीं। वह तो हृदय मे स्पष्ट रूप से बैठा है और हम प्रत्येक क्षण उसके स्पर्श का अनुभव करके पुलकित हुआ करते हैं। कवि उस 'जीवन-देवता' को संसार में सभी ओर देखता है। इसी उद्देश्य से सब प्रकार के पापों और कुकर्मों से बचकर रहना चाहता है जिससे उसका शरीर भगवद्-स्पर्श योग्य रह सके। कवि को मृत्यु भी एक शत्रु की तरह नहीं, वरन् मित्र जान पड़ती है। एक गीत में वह कहता है—मृत्यु दयामयी जननी है। जिस प्रकार माता बच्चे के मुँह से अपना एक स्तन छुड़ा लेती है तो वह दूसरा स्तन पाने के विश्वास से आश्वस्त रहता है, उसी प्रकार मृत्यु मानवरूपी शिशु को एक रिक्त जीवन से हटाकर दूसरे परिपूर्ण जीवन में प्रविष्ट कराती है।"

इङ्गलैण्ड से महाकवि अमेरिका गये। वहाँ भी उनका अपूर्व सम्मान हुआ और सैकड़ों संस्थाओं ने उनको भाषण के लिये निमन्त्रित किया। योरोप और अमरीका में उन्होंने भारतीय ज्ञान को श्रेष्ठ और कमनीय रूप में प्रकट किया उससे हमारे देश का सम्मान बहुत बढ़ गया। वहाँ के निवासी कहने लगे कि जिस देश में रवीन्द्रनाथ के समान विचारक और विद्वान् उत्पन्न हो सकते हैं, उसे असभ्य और असंस्कृत कैसे कहा जा सकता है ? उन्होंने समझ लिया कि भारत के विरुद्ध प्रचार करना अँग्रेज शासकों की स्वार्थपूर्ण नीति का ही एक अङ्ग है। वेद और उपनिषदों के अध्यात्मज्ञान के प्रणेता, जिसका परिचय रवीन्द्रनाथ अपनी कविताओं में दे रहे हैं, कभी असभ्य नहीं हो सकते।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org



अमरीका में महाकवि का जो अभूतपूर्व स्वागत-सम्मान हुआ, उसका बढ़ा-चढ़ा सचित्र वर्णन वहाँ के पत्रों में प्रकाशित होने से योरोप के अन्य देश वालों में भी उनके सम्बन्ध में उत्सुकता पैदा हो गई और जगह-जगह से उनके पास निमन्त्रण आने लगे। इसलिये कुछ समय पश्चात् दुबारा उनको योरोप यात्रा करनी पड़ी थी। डेनमार्क जाने का विचार तो वे बहुत पहले कर चुके थे। वहाँ की राजधानी कोपेनहेगेन में हजारों नगर निवासी उनके स्वागतार्थ आये। विश्व-विद्यालय में उनका भाषण ऐसा पसन्द किया गया कि हजारों लड़कों और नागरिकों ने उनका जलूस 'जलती हुई मशालों' के साथ निकाला और इस प्रकार भारत की दार्शनिक और धार्मिक विचार–धारा का आदिक सम्मान किया।। स्वीडेन में भी उनका ऐसा ही सम्मान किया। वहाँ के जलूस में सबसे आगे उस देश के लाट-पादरी (प्रधान धर्म गुरु) चल रहे थे। इतना सम्मान वहाँ किसी विदेशी विद्वान का कम ही देखने में आया था।

जर्मनी वालों को तो आर्य संस्कृति पर विशेष अभिमान है और वेदों का सबसे अधिक प्रचार उसी देश में हुआ है। वहाँ के विश्व-विद्यालय में रवीन्द्र नाथ का दर्शन करने और भाषण सुनने इतनी अधिक भीड़ हो गई कि सभा-भवन हाल ही नहीं बरामदा और सीढ़ियाँ भी जन-समूह से भर गईं। दरवाजे और सीढ़ियों पर जन-समूह की अधिकता के कारण स्वयं महाकवि का सभा-मंच तक पहुंचना कठिन हो गया। उनके सम्बन्ध में लोगों ने जो बातें सुन रखी थीं उनसे वे यही समझ रहे थे कि रवि बाबू भगवान ईसा मसीह के सदृश ही हैं। वास्तव में योरोप मे महाकवि को एड़ियों तक लम्बे लबादे सफेद लम्बी दाढ़ी और सफेद सर के बालों ने एक ईसाई सन्त के रूप में ही परिवर्तित कर दिया था। जब वहाँ से कोई दर्शक हटने को राजी न हुआ तब एक अध्यापक बहुत से लड़कों को लेकर बाहर चले आये और बाहरी दर्शकों को अपना स्थान देकर रास्ता साफ कराया। इस पर लड़के निराशा प्रकट करने लगे। महाकवि ने कहा—'तुम लोग खेद मत करो, कल मैं तुमसे अलग बातचीत करूँगा। उस सभा में चौदह-पन्द्रह हजार दर्शक इकट्ठे हो गये थे।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

जर्मनी में रवि बाबू की पुस्तकों का भी बड़ा आदर हुआ । तीन सप्ताह के भीतर उनकी एक पुस्तक की पचास हजार प्रतियाँ बिक गईं ।

फ्रांस वालों ने भी स्वागत में किसी प्रकार की कमी नहीं रखी । वहाँ के अधिकांश निवासी रोमन कैथोलिक सम्प्रदाय के अनुयायी हैं, जो भारतवर्ष के भक्ति-मार्ग से मिलता-जुलता है महाकवि रवीन्द्र की पोशाक तथा आकृति पुराने ढङ्ग के पादरियों से मिलती-जुलती जान पड़ती थी । इसलिये कितने ही लोग तो भक्तिपूर्वक झुककर उनके लबादे का किनारा चूमते थे और ताली पीट-पीटकर प्रसन्नता का भाव प्रकट करते थे ।

महाकवि जहाँ कहीं गये उन्होंने भारतीय अध्यात्म पर आधारित समानता तथा प्रेम का सन्देश ही दिया—'हम सब भाई-भाई हैं । अमीर-गरीब का भेद निरर्थक है । मनुष्य-मनुष्य में कोई अन्तर नहीं । भाई के साथ द्वेष करना अथवा लड़ना धर्म नहीं हैं । सबसे प्रेम करना ही मानवता का सार है । प्रेम व भाईचारे का व्यवहार संसार का सबसे बड़ा सत्य सिद्धांत है ।"

नोबल पुरस्कार की प्राप्ति

योरोप के स्वीडेन देश में अलफ्रेड नोबल नाम के एक बहुत बड़े उद्योगपति हो गये हैं, जिन्होंने अपनी सम्पत्ति का एक बहुत बड़ा भाग संसार के विद्वानों, वैज्ञानिकों और शान्ति प्रचारकों को पुरस्कार देने के लिये अर्पित कर दिया था । उसी संस्था की तरफ से प्रति वर्ष एक लाख बीस हजार रुपये का एक पुरस्कार संसार के किसी भी देश के ऐसे साहित्यकार को दिया जाता है, जिसकी रचना एक निर्णायक समिति द्वारा सर्वश्रेष्ठ-स्वीकार करली जाय । सन् १९१३ में जब महाकवि योरोप की यात्रा करके वापस आये तो कुछ ही सप्ताह में समाचार आया कि इस वर्ष का नोबल पुरस्कार उनकी पुस्तक 'गीतांजलि' पर देने का निश्चय किया गया है । इस समाचार से समस्त भारत में प्रसन्नता की लहर दौड़ गई । यह महाकवि की विद्वता और प्रतिभा का तो आदर-था ही पर लोगों ने इसे एक राष्ट्रीय सम्मान भी समझा महाकवि के सम्मान में वहाँ भी बड़ा समारोह किया गया । उस वर्ष लाट साहब की कोठी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org



पर एक बड़ा दरबार हुआ तो उसी अवसर पर नोबल पुरस्कार और एक तगमा उन्होंने अपने हाथ से महाकवि को प्रदान किया।

संस्कृत भाषा में एक सुभाषित है कि 'धनवान अथवा राजा तो अपने देश में ही पूजा जाता है पर विद्वान् सर्वत्र पूजनीय होता है।" यद्यपि उस समय भारतवर्ष पूर्ण रूप से अँगरेजों के अधीन था और गोरी जातियाँ यहाँ के निवासियों को 'काला' कहकर उपेक्षा की दृष्टि से देखती थीं, पर उसी जाति का होने पर भी रवि बाबू का सब जगह एक देवदूत अथवा राजा-महाराजाओं जैसा स्वागत किया गया। यह सब उनकी सरस्वती आराधना का ही परिणाम था। उन्होंने स्कूल-कालेजों की सदोष शिक्षा-पद्धति से विरक्त होकर अपना मार्ग स्वयं ही बनाया और अपने अध्यवसाय से अपने को शिक्षित और ज्ञान सम्पन्न बनया। और फिर इस ज्ञान-साधना से स्वयं कोई लाभ न उठा कर उसका लाभ पूरी तरह अपने देशवासियों को दिया।

कुछ समय पश्चात् भारत सरकार ने भी महाकवि के महत्त्व को स्वीकार किया और उनको एक बहुत बड़ी पदवी प्रदान की। 'सर' अथवा' नाइट' की पदवी सामान्यतः इङ्गलैण्ड के रईसों और विशिष्ट देश-सेवकों को दी जाती है। वही उन दिनों भारत के दो-चार गिने-चुने विद्वानों को दी गई, जिनमें रवीन्द्र भी एक थे। बंगाल के गवर्नर स्वयं शान्ति निकेतन गये और महाकवि के पास कई दिन तक अतिथि के रूप में ठहरे रहे। पर यह स्थिति थोड़े ही समय तक रही, क्योंकि भारतवर्ष में अँगरेजों की शासन-नीति के विरुद्ध आन्दोलन चल रहा था और महाकवि को भी उससे पूरी सहानुभूति थी। वे भारतवासियों पर सरकारी अन्याय का खुलकर विरोध करते थे। जब रौलेट एक्ट के विरोध में आन्दोलन छिड़ा और अमृतसर के 'जलियाँवाला बाग' की एक सार्वजनिक सभा में कई सौ व्यक्ति अँग्रेज जनरल डायर द्वारा मशीनगन से भून डाले गये, तो महाकवि ने भी उसका बड़ा विरोध किया और ऐसी सरकार से किसी प्रकार का सम्बन्ध रखना बुरा समझकर उसकी प्रदान की हुई 'सर' की पदवी को भी वापस कर दिया। इस अवसर पर भारत

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org



के वाइसराय लार्ड चेम्सफोर्ड को उन्होंने एक लम्बा पत्र लिखा जिसमें कहा गया था—

"हमारी आँखें खुल गई हैं कि हमारी अवस्था कैसी असहाय है। अभागी भारतीय जनता को इस समय जो दण्ड दिया गया है उसका उदाहरण किसी सभ्य सरकार के इतिहास में नहीं मिल सकता। पर हमारे शासक इस कृत्य के लिये उल्टा अपने को शाबासी दे रहे हैं कि उन्होंने भारतवासियों को 'अच्छा सबक' सिखा दिया है। अधिकांश अधगोरे (एंग्लो इण्डियन) समाचार पत्रों ने इस निर्दयता की प्रशंसा की है और उनमें से कुछ ने तो पाशविकता की सीमा पर पहुँच कर हमारी यातनाओं का उपहास भी किया है। सरकारी अधिकारियों ने उन समाचार पत्रों पर तो किसी प्रकार का प्रतिबन्ध नहीं लगाया, उल्टा जनता के साथ सहानुभूति रखने वाले भारतीय समाचार पत्रों का ही गला दबाया। इस अवसर पर मैं कम से कम इतना तो कर ही सकता हूँ कि भारी से भारी दुष्परिणाम भोगने के लिये तैयार होकर अपने उन करोड़ों देशवासियों की विरोध भावनाओं को व्यक्त करूँ, जो आतंक और भय के कारण चुपचाप सरकारी दमन को सह रहे हैं। समय आगया है कि जब सरकार द्वारा प्रदत्त 'सम्मान के पट्टे (पदवियाँ) राष्ट्रीय-अपमान के साथ मेल नहीं खा सकते। वे हमारी निर्लज्जता को और भी चमका देते हैं। अतएव मैं विवश होकर सादर प्रार्थना करता हूँ कि आप मुझे सम्राट दी गई 'नाइट' की उपाधि से मुक्त कर दें।"

इस प्रकार महाकवि ने यह दिखला दिया कि जहाँ मानवता और राष्ट्रीयता का प्रश्न उपस्थित हो, वहाँ प्रत्येक क्षेत्र के व्यक्ति को आगे बढ़कर उसके विरोध में अपना दायित्व निभाना चाहिये। यद्यपि एक उच्चकोटि के कवि का दृष्टिकोण बड़ा व्यापक होता हैं और वह मानव मात्र को एक ही परमपिता की सन्तान मानकर सबको सम-दृष्टि से ही देखता है, पर जब लोगों का एक समुदाय दूसरे समुदाय के साथ अमानवीय व्यवहार करे तो कवि का भी यह धर्म हो जाता है कि वह अन्याय के विरुद्ध अपना स्वर ऊँचा करे। यद्यपि अपनी वृद्धावस्था और शान्त प्रकृति के कारण अँगरेजों के विरुद्ध उग्र

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

आन्दोलन में पूरी तरह भाग ले सकने में समर्थ नहीं थे, तो भी उन्होंने ब्रिटिश सम्राट द्वारा प्रदान की हुई इतनी बड़ी पदवी को ठुकराकर और दण्ड के लिये प्रस्तुत होकर अपना असन्तोष अच्छी तरह प्रकट कर दिया। यही प्रत्येक स्वाभिमानी व्यक्ति का कर्त्तव्य होना चाहिये। अन्याय के सम्मुख सिर झुकाना बहुत बड़ी हीनता और कायरता की निशानी है।

एशियाई देशों में सम्मान

योरोप और अमरीका के देशों में भ्रमण करने के पश्चात् महाकवि जापान, चीन ईरान आदि एशियाई देशों मैं भी गये और वहां भी उनका राजसी स्वागत किया गया। जापान में वहाँ के एक बहुत बड़े राष्ट्र नेता ओकुमा ने उनकी प्रशंसा में जापानी भाषा में भाषण किया और रवि बाबू ने उसका उत्तर बंगला भाषा में दिया। जापान के विद्वानों ने महाकवि का बड़ा सम्मान किया। पर यहाँ भी उन्होंने अपनी न्याय प्रियता का परिचय दिया जिससे जापान-सरकार उनसे नाराज हो गई। बात यह थी कि उन दिनों अपने पड़ौसी चीन को निर्बल देखकर शक्तिशाली जापानी-सरकार उस पर कब्जा करने की योजना बना रही थी। महाकवि को यह 'दस्युवृत्ति' कब पसन्द आ सकती थी! अतएव उन्होंने जापान में बैठकर ही वहाँ के शासकों की इस स्वार्थपूर्ण नीति को भर्त्सना की। निरंकुश और आधनायकवाद में विश्वास रखने वाले शासनकर्ताओं को यह बात कैसे सहन हो सकती थी? फिर भी महाकवि ने उनकी चिन्ता न करके अपनी निष्पक्ष सम्मति प्रकट कर दी और उनके देश से अपेक्षाकृत शीघ्र ही चले आये।

कुछ समय पश्चात् पेकिङ्ग विश्व विद्यालय के निमंत्रण पर चीन भी गये। रास्ते में बर्मा, सुमात्रा, बाली, जावा आदि में भी उनका स्वागत किया गया। चीन में तो उनका ऐसा स्वागत—समारोह किया गया जैसा राजा-महाराजाओं का ही किया जाता है। फौजी अफसर उनकी देख-भाल करते थे। प्रत्येक स्टेशन पर इस बात की पूछताछ की जाती थी कि उनको किसी बात की असुविधा तो नहीं है। चीन के विद्यार्थियों के आग्रह पर महाकवि को सम्राट के महल के पास ही ठहराया गया। चीन—सम्राट ने—यद्यपि

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

उस समय प्रजातन्त्र स्थापित हो जाने से उन्हें शासन—भार से मुक्त कर दिया गया था—स्वयं अपने महल में उनकी बड़ी खातिर की, घन्टा भर तक बात-चीत की और एक बहुत पुरानी बहुमूल्य तस्वीर उन्हें भेंट स्वरूप दी। पर महाकवि इस राज सम्मान को पाकर भी सामान्य जनता को नहीं भूले। उन्होंने सार्वजनिक सभा में कहा—"भाइयों ! मैं एक सामान्य कवि हूँ। पर मैं एक मनुष्य हूँ और उसी हैसियत से तुम्हारे सामने खड़ा हूँ। मेरे मृदय में तुम सबके लिये ऊँचा स्थान है। तुमने भी मुझे बड़े प्रेम के साथ अपनाया है। इस प्रकार का प्रेम बराबर बालों में ही हो सकता है। मैं भी तुमसे बड़ा नहीं बराबर का ही हूं।"

जिन दिनों महाकवि चीन में ठहरे थे, तभी उनकी सष्टगाँठ का अवसर आ गया। चीन वालों ने अपनी पद्धति के अनुसार समारोह मनाया और उनके लिते शानदार नीले रंग का पैजामा, नारंगी रङ्ग का पीला, कुर्ता और बैंजनी रङ्ग की सुन्दर टोपी तैयार की गई और लोगों के आग्रह से महाकवि को उस पोशाक को धारण करके उस समारोह में भाग लेना पड़ा। वहाँ के लोग उनको अपने जातीय स्वरूप में देखकर बड़े प्रसन्न हुए और उनको 'चु-चेन-तांग' का नया नाम दिया जिसका अर्थ होता है "वज्र के समान शक्तिशाली भारत-सूर्य !"

ईरान भी प्राचीन काल से बड़े-बड़े कवियों की भूमि रही है। वहाँ के बादशाह ने स्वयं निमन्त्रण भेजकर 'विश्व-कवि' का अपने यहाँ अपूर्व स्वागत किया। इटली पहुँचने पर वहाँ के तानशाह मुसोलिनी ने कहा—"मैं आपकी रचनाओं को बड़े प्रेम से पढ़ता हूँ और वे मुझे पसन्द आती हैं।" इटली में उनको सरकारी मेहमान की हैसियत से रखा गया और उसी तरह का सब इन्तजाम किया गया जैसा अन्य देशों के बड़े शासकों या राजाओं के आने पर किया जाता है।

स्विजरलैण्ड का देश प्राकृतिक शोभा की दृष्टि से योरोप का "नन्दन कानन" माना जाता है। उसी भूमि कवियों के लिये स्वभावतः आकर्षक और प्रसन्नता दायक होती है। वहाँ की शोभा देखकर महाकवि बहुत प्रसन्न हुये

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

और योरोप वालों को अपना सन्देश देते हुये कहा—"भारत की सभ्यता बहुत पुरानी है। इसकी मिट्टी के कण-कण में सत्य की भावना पाई जाती है। भारत ने ही उस समय योरोप को शिक्षित बनाया था, जिस समय योरोप के लोग आदिम अवस्था में थे और ज्ञान-विज्ञान से अपरिचित थे, उस समय भारत एक महान् और सभ्य देश था। वहाँ के निवासी जलयानों द्वारा दूर-दूर के देशों में गये और वहाँ अपनी शिक्षा व संस्कृति का प्रचार किया।"

महाकवि रूस भी गये, जहाँ की सभ्यता, संस्कृति अब एक नये ढाँचे में ढाली गई है। वहाँ अमीर-गरीब का भेद नहीं रखा गया है और सबको परिश्रम करके ही जीवन निर्याह करना पड़ता है। वहाँ का शासन प्रबन्ध सामान्य जनता के प्रतिनिधि चलाते हैं। वहाँ पर सब प्रकार के उद्योग-धन्धे तथा खेती सहकारी पद्धति पर चलाये जाते हैं जिनमें कोई एक व्यक्ति स्वामी नहीं होता। इस प्रकार की व्यवस्था को देखकर महाकवि बहुत प्रभावित हुए। उन्होंने रूस की प्रशंसा में कितने ही पत्र लिखकर अपने इष्ट-मित्रों और घर वालों को भेजे। जिस बात को वहाँ पर उन्होंने सबसे अधिक पसन्द किया वह थी वहाँ के लोगों में बराबरी की भावना। कोई किसी को छोटा-बड़ा नहीं समझता। हम भारतवासी भी मनुष्य मात्र को एक ही ईश्वर की सन्तान मानकर सबको उराबर बतलाते हैं। इतना ही नहीं हमने इससे भी आगे बढ़कर "आत्मवत् सर्व भूतेषु' के सिद्धान्त की घोषणा की है। पर व्यवहार में हम इन "महान् सिद्धान्तों" से प्रतिकूल ही चलते हैं। हम अपने ही समाज के एक अङ्ग--अछूतों के साथ जैसा निकृष्ट व्यवहार करते उसकी तुलना संसार के किसी भी देश में नहीं मिलती। महाकवि रवीन्द्र ने इस त्रुटि को बहुत अच्छी तरह भमझा और इसीलिये रूस का उदाहरण दिखलाकर हमको समता का व्यवहार अपनाने की प्रेरणा दी।

रवीन्द्र नाथ और गाँधीजी !

महात्मा गाँधीजी के साथ रवीन्द्र नाथ का बड़ा प्रेम था, और इन दो महामानवों को निकट लाने का कार्य किया था तीसरे महामानव एण्डरूज ने। एण्डरूज साहब असली अँगरेज थे और विलायत के ईसाई मिशन की नौकरी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

करके दिल्ली के एक क्रिश्चियन कालेज में पढ़ाने आये थे। अँगरेजों की अहमन्यता तथा भारतवासियों के प्रति उनका दुर्व्यवहार देखकर उनका हृदय बड़ा व्यथित हुआ और वे भारतवर्ष को उसका न्यायपूर्ण अधिकार दिलाने के समर्थक बन गये। वे ईसाइयों के कालेज की नौकरी छोड़कर महाकवि रवीन्द्र नाथ के शान्ति निकेतन में चले आये और भारतीय युवकों को शिक्षा देने के साथ ही आवश्यकता पड़ने पर यहाँ के राजनैतिक आन्दोलन में भी भाग लेने लगे। महाकवि की अनुमति से वे महात्मा गाँधी के सत्याग्रह आन्दोलन में सहायतार्थ दक्षिण अफरीका गये। रास्ते में उनको अन्य गोरे यात्रियों ने बहुत डराया कि तुमको दक्षिण अफरीका का शासन कर्ता जनरल स्मट जहाज से उतरते ही गिरफ्तार कर लेगा। पर मि० एण्डरूज ने इन बातों की चिन्ता न करके दक्षिण अफरीका में सत्याग्रह संग्राम में गांधीजी की बड़ी सहायता की और उनकी अधिकांश माँगों को स्वीकार कराके दोनों पक्षों में सुलह करा दी। वे गाँधीजी के पुत्रों को लेकर शान्ति निकेतन में वापस आये और जब गाँधीजी अफ्रीका से भारत आये उनको भी शान्तिनिकेतन में ठहराया। गाँधी जी महाकवि को 'गुरुदेव' कहकर सम्बोधित करते थे और विद्या तथा आयु की दृष्टि से वे इस पदवी के योग्य भी थे। रवीन्द्र नाथ भी गाँधीजी से अत्यन्त प्रेम रखते थे। जब यरवदा जेल में गाँधी जी ने सरकारी नीति के विरोध में आमरण अनशन किया तो महाकवि उनकी कुशलता के लिए चिन्तित होकर स्वयम् पूना गये और गाँधीजी से मिलकर उनके छुटकारे के लिये विलायत की सरकार के पास तार भेजा उनके प्रयत्नों से दोनों में समझौता हो गया और गाँधीजी ने अनशन छोड़ दिया। उस समय गाँधीजी का स्वास्थ्य बड़ा नाजुक हो गया था और महाकवि बराबर उनके बिस्तर के पास बैठ कर देख-भाल करते रहते थे। गाँधीजी को रवीन्द्र नाथ का संगीत बहुत प्रिय था। अनशन छोड़ने के दिन उन्होंने महाकवि के मुख से ही एक सुन्दर गीत सुना।

पर व्यक्तिगत रूप से ऐसा प्रगाढ़ प्रेम होने पर भी राजनीतिक आन्दोलन के सम्बन्ध में दोनों बहुत कुछ मतभेद भी रहता था। जब गाँधीजी ते अपने आन्दोलन का आधार अहिंसा को बनाया तो वह उनको पसन्द आया। पर जब उन्होंने असहयोग की घोषणा करके लड़कों को स्कूल और

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

कालेज छोड़ने के लिए कहा, बिलायती कपड़ों की होली जलाने का कार्य-क्रम आरम्भ किया तो महाकवि ने उसका विरोध किया । वे कहते थे कि इस प्रकार लड़कों को भड़काने से वे आवारा बन जायेंगे । वस्त्र बहिष्कार और चरखा के सम्बन्ध में वे कहते थे—'गाँधीजी मशीनों के खिलाफ हैं तो मेरी भी वही सम्मति है । पर हमारी बुराइयों की जड़ तो भीतरी कमजोरी है । हम चलने, बोलने और हँसने में भी डरते हैं । अँगरेज सरकार के हुक्म पर उठते-बैठते हैं । हमारी अपनी ताकत कुछ भी नहीं है । हम कायर हैं, सरकार से हर बात में डरते रहते हैं । इस जबर्दस्ती के मैं विरुद्ध हूं । पर गाँधीजी भी लोगों पर ऐसी ही जबर्दस्ती कर रहे हैं । वह देश को स्वतन्त्र करना चाहते हैं पर लोगों के स्वतन्त्र-विचारों पर वह हुक्म चला रहे हैं । इस तरह अगर हमको स्वतन्त्रता मिल भी जायगी, तो भी हम सच्चे अर्थों में स्वतन्त्र न हो सकेंगे ।''

'विश्व भारती' और श्रीनिकेतन' की स्थापना—

रवीन्द्र नाथ केवल कवि और कलाकार ही नहीं थे वरन् जैसा हम अन्यत्र लिख चुके हैं वे एक सच्चे कर्मयोगी भी थे । जहाँ वे एक ओर शान्ति-निकेतन में बालकों और युवकों को विद्या, कला, ज्ञान की शिक्षा देते थे, वहीं सन् १९१२ में ही उन्होंने शान्ति निकेतन से ३ मील पर बहुत सी जमीन खरीद कर श्रीनिकेतन की स्थापना की । इस संस्था का उद्देश्य विद्यार्थियों को कृषि, ऊद्योग और व्यवसाय का व्यावहारिक प्रशिक्षण देना था । अब तक यहाँ म हजारों विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त करके सफलता पूर्वक देश की प्रगति में योगदान कर चुके हैं ।

महाकवि ने योरोप, अमरीका के विद्वानों और विश्वविद्यालयों के निमन्त्रण पर उन देशों की आठ बार यात्रा की थी और वहाँ की प्रगति तथा परिस्थितियों का सूक्ष्म निरीक्षण किया था । उन्होंने इस तथ्य को भली प्रकार समझ लिया कि जहाँ भारत को योरोप से पुरुषार्थ और भौतिक साधनों में प्रगति सम्बन्धी शिक्षा ग्रहण करने की आवश्यकता है, वहाँ योरोप भी भारत से अध्यात्म विषयक ज्ञान प्राप्त करके अपनी स्थिति को सुदृढ़ कर सकता है ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

इस उद्देश्य की पूर्ति के लिये उन्होंने 'विश्व भारती' की स्थापना की। इसका आदर्श-वाक्य (मोटो) रखा गया "विश्व भवत्येक नीडम्" अर्थात् "यहाँ सारे संसार को शरण मिल सकती है।"

सचमुच वर्तमान युग में विश्व की सबसे बड़ी समस्या यही है कि वह भौतिकवाद और अध्यात्मवाद में समन्वय किस प्रकार करे? अब तक विश्व की अधिकांश संस्कृतियों का विकास एकाङ्गी हुआ है। कम से कम पिछले पाँच-सात सौ वर्षों से योरोप भौतिक साधनों और शक्ति को बढ़ाने में लगा हुआ है और एशिया के देश इस बीच में प्रायः प्राचीनता के नाम पर आध्यात्मिक विषयों पर ऊहापोह में तल्लीन रहे। वास्तविक अध्यात्म तो बहुत उच्चकोटि का और चारों पुरुषार्थों को प्रदान करने वाला मार्ग है, पर जब मनुष्य केवल उसके सैद्धान्तिक ढाँचे को ग्रहण कर लेता है और वास्तविक शक्ति से रहित होकर सांसारिक दृष्टि से उनका पतन हो जाता है और वह परमुखापेक्षी बन जाता है। इसी स्थिति को देखकर आज अधिकांश शिक्षित कहलाने वाले 'अध्यात्म' को एक निकम्मी चीज समझने लगे हैं और भारतवर्ष को ही इसका सबसे बड़ा उदाहरण बतलाते हैं।

महाकवि ने रस समस्या को अच्छी तरह समझा था और इसी को हल करने के लिये आदर्श के रूप में 'विश्व भारती' की स्थापना की थी। उनका उद्देश्य यही था कि जिस प्रकार योरोप अमरीका की कुछ संस्थाएँ भारतीय छात्रों को विज्ञान और आधुनिक कला-कौशल की शिक्षा दे रही हैं उसी प्रकार भारत में भी कोई संस्था ऐसी होनी चाहिये जहाँ सब देशों के ज्ञानाभिलाषी सम्मिलित हों, अध्यात्म के सिद्धान्त और व्यवहार को जानने की सुविधा प्राप्त कर सकें। इसीलिये उन्होंने संसार भर के देशों का कई-कई बार भ्रमण करके वहाँ के विद्वानों तथा संस्थाओं से सम्बन्ध स्थापित किया और उनके तथा अपने विचारों के आदान-प्रदान की व्यवस्था की। इसके परिणाम स्वरूप वे 'विश्वभारती' का शिक्षाक्रम ऐसा आकर्षक और सर्वोपयोगी बना सके कि प्रत्येक देश और मजहब के विद्यार्थी उसमें अपनेपन की भावना को उपलब्ध करने लगे। इसी से भारत को अनेक हिन्दू-मुस्लिम शासकों, भारत

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org



सरकार, चीन सरकार, विदेशों के धनियों तथा संस्थाओं ने उसे सहायता और सहयोग दिया। जिसमें संसार के सभी प्रमुख देशों के उच्च कोटि के साहित्य, इतिहास, धर्म और संस्कृति के अध्ययन की व्यवस्था है। इसमें उच्च शिक्षा प्राप्त व्यक्ति ही भाग लेते हैं। अन्य विद्यार्थियों के लिये 'शान्ति निकेतन' का शिक्षाक्रम इससे पृथक है। वह प्रातःकालीन प्रार्थना से आरम्भ होकर रात्रि में भी समस्त छात्रों के सामूहिक गायन से समाप्त होता है।

ज्ञान-यज्ञ के सर्वहुत होता--

जैसा पाठकों को अब तक के जीवन-वृतान्त से प्रतीत हुआ होगा महाकवि रवीन्द्र संसार के उन इने-गिने मानव-तन धारियों में से एक महान्-आत्मा थे, जिनका जन्म किसी विशेष उद्देश्य की पूर्ति के लिये ही होता है। इसलिये वे संसार में चाहे धन, मान, पदवी प्राप्त करके बड़े आदमी कहलायें, चाहे लँगोटी लगा और सूखी रोटी खाकर निर्धन अवस्था में रहें, परवे कोई ऐसा महान् कार्य पूराकर जाते हैं जिससे आगामी पीढ़ियाँ सैकड़ों वर्षों तक उनका गुणानुवाद करती रहती हैं। महाकवि रवीन्द्र वंशक्रम से उच्च पदस्थ और धनी व्यक्ति थे और तत्पश्चात् अपनी अप्रतिम योग्यता से भी उन्होंने बहुत कुछ कमाया। उनकी लिखी पुस्तकों की बिक्री भी देश-विदेश में इतनी हो जाती थी कि उससे भी काफी आय होती थी। पर इस सम्पत्ति को उन्होंने "ज्ञान-यज्ञ" में समर्पित कर दिया।

उनका यह 'ज्ञान-यज्ञ' 'शान्ति निकेतन' और 'विश्वभारती' के रूप में था। यद्यपि इसमें रहने वालों का रहन-सहन बहुत सादा और सात्विकता-पूर्ण था, तो भी जब उसका अधिक विस्तार हो गया और उसमें एक अन्त-र्राष्ट्रीय स्तर की योग्यता के शिक्षकों को रखने की आवश्यकता पड़ी तो उनके निजी साधन अपर्याप्त हुये। बाहर के धनिकों ने स्वेच्छा से जो सहायता दी वह भी इस व्यय की पूर्ति न कर सकी। इस पर भी महाकवि ने हिम्मत नहीं हारी और वे बहुत सा काम अपने हाथ से ही करके उसका सञ्चालन करते रहे। अन्तिम वर्षों में जब वे ८० वर्ष के लगभग हो चुके थे तो संस्था के लिये धन का ऐसा अभाव हुआ कि उन्होंने नाटकों के अभिनय करके उसके

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

लिए धन एकत्रित करने का निश्चय किया। तदनुसार वे अपनी शिष्य मण्डली के साथ बाहर निकले और कई स्थानों में अभिनय किए। जब गाँधीजी ने यह सुना कि महाकवि को इस अन्तिम अवस्था में स्वास्थ्य के ठीक न होते हुए भी संस्था के व्यय-निर्वाह के लिए नगर-नगर भटकना पड़ रहा है, तो उन्होंने अपने एक धनिक अनुयायी को उनकी सहायता के लिए प्रेरणा दी और बम्बई पहुँचते ही महाकवि को ६० हजार का एक चेक प्राप्त हो गया। व्यय की समस्या हल हो जाने पर वे अपने आश्रम में वापस आ गये।

महापुरुषों का यही लक्षण बताया गया है कि सम्पत्ति-विपत्ति में अपनी चित्तवृत्ति को सन्तुलित रखें और उद्देश्य से किसी दशा में पीछे पैर न हटावें। भला-बुरा समय सब पर आता है, सुख-दुःख, हानि-लाभ, सफलता-असफलता, मान-अपमान के द्वन्द्व से कोई बच नहीं सकता तो फिर अपनी निर्बलता प्रकट करने से, अपनी चित्तवृत्ति को हीन बनाने से क्या लाभ हो सकता है? जो निर्बल चित्त पुरुष अपना दुःख चाहे जिसके सामने रोते रहते हैं, उनकी सहायता तो कोई करता नहीं, उल्टा सामने नहीं तो पीठ-पीछे हँसी उड़ाने वाले अनेक निकल आते है। इसलिए श्रेष्ठ मनुष्यों की कार्य-प्रणाली यही होती है कि वे किसी भी परिस्थिति में धैर्य नहीं छोड़ते और फल की चिन्ता न करके अपने कर्तव्य-पालन में लगे रहते हैं। इसका परिणाम प्रायः यह होता है कि 'ईश्वर उनकी सहायता करता है जो अपनी सहायता आप करते हैं, वाली कहावत के अनुसार किसी न किसी स्रोत से उनको सहायता भी मिल जाती है। यदि सहायता न भी मिले तो हृदय में यह संतोष रहता है कि हमने अपनी सामर्थ्य भर उद्योग कर लिया, सफलता-असफलता तो परमात्मा के आधन हैं।

इसी दैवी नियम को अपना आदर्श मान कर महाकवि दोनों संस्थाओं का सञ्चालन अपने जीवन के अन्तिम वर्ष (१९४१) तक करते रहे। सन् ४० के सितम्बर से ही वे बीमार हो गए और मई १९४१ तक हालत खराब रही। इलाज के लिए उनको शान्ति निकेतन से कलकत्ता लाया गया जहाँ प्रसिद्ध डाक्टर उनकी देख-भाल करते थे। उस समय गाँधीजी ने अपने प्राइवेट

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सेक्रेटरी महादेव देसाई को उनका समाचार लेने वर्धा से कलकत्ता भेजा। गाँधीजी का प्रेमपूर्ण सन्देश सुनकर उनकी आँखों से आँसू बहने लगे। इसके पहले कभी किसी ने उनकी आँखों में आँसू नहीं देखे थे। गाँधीजी के हार्दिक प्रेम ने ही उनके हृदय को इस प्रकार द्रवित कर दिया।

इसके बाद बीच में उनकी तबियत कुछ सँभली। महाकवि की वर्षगाँठ वैशाख महीने में बड़ी धूम-धाम से मनाई गई। सब आश्रम वासियों ने खूब सजावट की और महाकवि को अनेक वस्तुएँ भेंट दी गई। यद्यपि सब लोग उनको देखकर यह नहीं जानते थे कि यही उनकी अन्तिम वर्षगाँठ है, पर वे स्वयम् इस बात को अच्छी तरह समझते थे। उन्होंने उस अवसर पर जो कविता बनाई उसमें आने वाली मृत्यु का स्पष्ट संकेत था।

वर्षा आरम्भ होने पर उनका स्वास्थ्य फिर बिगड़ने लगा और इलाज के लिए फिर कलकत्ता जाना पड़ा, वहाँ सात जून १९४१ को उन्होंने अन्तिम साँस ली और अपना कर्तव्य पूरा करके जहाँ से आए थे वहीं चले गए।

रवीन्द्र का साहित्य और कला –

भारतवर्ष में कवियों और ग्रन्थकारों की कमी नहीं है। सभी प्रदेशों में और भाषाओं में दो-चार ऐसे कवि और रचयिता अवश्य हुए हैं जिनका नाम और यश स्थायी हो गया है इन सबकी रचनायें उत्कृष्ट श्रेणी की और मानव-मन को श्रेष्ठता का मार्ग दर्शन कराने वाली हैं। पर रवीन्द्र के काव्य और कथा-साहित्य में कई ऐसी विशेषताएँ हैं जो उनको सच्चे अर्थों में विश्व-कवि बनाती हैं।

पहली विशेषता यह है कि उन्होंने जो कुछ लिखा है वह किसी एक देश या जाति के लोगों को लक्ष्य करके नहीं लिखा। एक सच्चे अध्यात्मवादी की तरह उनको मनुष्यों के बीच किसी तरह का अन्तर नहीं जान पड़ता, वरन् 'एकोऽहम बहुस्याम' की वैदिक घोषणा के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति उनको एक ही स्रोत से निर्गत प्रतीत होता था। यद्यपि उन्होंने अपनी रचनायें बँगला भाषा लिखीं, इस कारण उनमें जो नाम आदि आए और जिन प्राकृतिक

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org



वातावरण तथा दृश्यों का चित्रण किया गया, वह अंधकांश मे वहीं से सम्बन्धित है, तो भी उनका लक्ष्य मानव मात्र को अपना सन्देश सुनाना रहा। उनके द्वारा रचित बहु संख्यक पुस्तकों पर इसी दृष्टि से विचार करते हुए एक विद्वान् ने रवीन्द्र—साहित्य का विश्लेषण इन शब्दों में किया है–

"कवीन्द्र-रवीन्द्र की प्रतिभा सर्वतोमुखी थी। उन्होंने कविता, की है, कहानियाँ लिखी हैं और नाटक निर्मित किए हैं, उपन्यास रचे हैं और निबन्ध लिखे हैं। कितनी विविधता है उनके साहित्य में! शायद ही उनके समकालीन किसी लेखक का 'केनवास' (क्षेत्र) इतना विस्तीर्ण हो! रवि ठाकुर का साहित्य किसी देश और काल का साहित्य नहीं है वह साहित्य है समस्त विश्व का और सब कालों का। वह संसार की मानवता से सम्बन्ध रखता है और चिर-समस्याओं सम्बन्धी सन्देश देता है। प्यासी मानवता के लिए वह खारा समुद्र न होकर क्षीर-सागर है। वे मानव दुःखों के निवारणार्थ समाज की कटु या तीखी आलोचना करके अपने साहित्य द्वारा कोई व्याख्यान नहीं देते, पर जो कुछ कहते हैं मानव की निर्बलताओं को अत्यन्त सहानुभूतिपूर्वक देखते हुए कलात्मक ढंग से। फिर उनका कथन उस देवदूत के सदृश जान पड़ता है जो मानव के सामाजिक सम्बन्धों से जकड़ा हुआ नहीं है। वह उनसे कुछ दूर है, कुछ हटा हुआ, पर उतनी दूर और इतना हटा हुआ भी नहीं कि निस्पृह और सहानुभूति से रहित हो जाय।

"उनका साहित्य ऐसी मनोदशा में रचा हुआ जान पड़ता है, जो मनोदशा उसी मन की हो सकती है, जो छोटे–से शरीर में रहते हुए भी अपने को समस्त सृष्टि में व्याप्त अनुभव करे। इसीलिए उनके साहित्य में अत्यधिक व्यापकता है। वह तर्क पर आश्रित नहीं श्रद्धा पर आश्रित है। वह श्रद्धा किसी प्रकार के अन्ध-विश्वासों की श्रद्धा नहीं है, पर यह ऐसी श्रद्धा है जो अनित्य और अस्थायी वस्तुओं से परे नित्य और स्थायी वस्तु पर ही रह सकती है। रवि ठाकुर के साहित्य में किसी प्रकार के सिद्धान्त की कट्टरता या हठधर्मी अथवा वाद-विवाद नहीं मिलेगा उसका लक्ष्य है मानवता को हर दृष्टि से सच्चा मानव बनाने और उसे ऊँचा उठाने का। कवि-

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सम्राट का इस प्रकार का साहित्य इसीलिए हो सका कि उनके आस्तिक और आशावादी मन को मानव दी निर्बलताएँ आच्छादित नहीं कर पायीं।"

निस्सन्देह महाकवि रवीन्द्र भारतवर्ष के प्राचीन महाकवियों की परम्परा में से थे और महाभारत तथा रामायण जैसी दैवी भावयुक्त रचनाओं से प्रेरणा ग्रहण करके वे उसी मार्ग पर चले थे। व्यास, वाल्मीकि, तुलसी आदि महाकवियों ने जो कुछ लिखा है वह यद्यपि हिन्दूधर्म से सम्बन्धित पाना जाता है, पर इस वैज्ञानिक-युग में भी योरोप और अमरीका के विद्वान् उसे अपनी भाषाओं में अनुवादित करके और अध्ययन करके उसे महत्व दे रहे हैं। इसका कारण यही है कि उन्होंने जो कुछ कहा है वह मानव मात्र को एक मानते हुए ही कहा है। महाकवि रवीन्द्र भी इसी मार्ग के अनुयायी थे और उनकी रचनायें किसी सङ्कीर्ण घेरे में आबद्ध न होकर विश्व-मानव की एकता और श्रेष्ठता का ही संदेश देती हैं।



मुद्रक—युग-निर्माण प्रेस, गायत्री तपोभूमि मथुरा।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उत्कृष्ट व्यक्तियों के जीवन-चरित्र जन-मानस में मानवीय आदर्शवादिता के लिये आस्था उत्पन्न करते हैं। कहना न होगा कि यह निष्ठा ही लोक-मंगल का मूल आधार है। इसलिये आदर्शवादी व्यक्तियों की जीवन-गाथाओं को अधिकाधिक जानकारी जन-कल्याण की दृष्टि से अतीव उपयोगी एवं आवश्यक मानी जाती रही है।

युग-निर्माण योजना द्वारा विचार-क्रान्ति के लिये जिस अभिनव साहित्य का निर्माण किया जा रहा है उसमें महामानवों के जीवन-चरित्रों की सीरीज को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। प्रस्तुत पुस्तक उन्हीं में से एक है। ऐसे-ऐसे अनेक जीवन-चरित्र छापे जा रहे हैं। हर महीने उनकी संख्या बढ़ जाती है। उनकी जानकारी पत्र लिखकर प्राप्त की जा सकती है। सभी जीवन-चरित्र इसी पुस्तक की भाँति ३२ पृष्ठों में हैं। उनका मूल्य ४० पैसा है।

मानवीय आदर्शों के प्रति आस्था रखने वाले प्रत्येक विचारशील व्यक्ति से यह आशा की जाती है कि वे इस साहित्य को स्वयम् पढ़ें और अपने परिवार तथा साथियों को भी इसे पढ़ावें, सुनावें।

'युग-निर्माण योजना' मथुरा।

मूल्य ४० पैसा

: युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य- संक्षिप्त परिचय :



ज्यादा जानकारी यहाँ से प्राप्त करें : http://hindi.awgp.org/about_us

- **विचारक्रान्ति अभियान के प्रणेता :** विचारों को परिस्कृत और ऊँचा उथाने मे समर्थ 3000 से भी अधिक पुस्तकों के लेखन के माध्यम से विश्वव्यापी विचार क्रान्ति अभियान की शरुआत की ।
- **वेद, पुराण, उपनिषद के प्रसिद्ध भाष्यकार :** जिन्हों ने चारों वेद, 108 उपनिषद, षड दर्शन, 20 स्मृतियाँ एवं 18 पुराणों का युगानुकूल भाष्य किया, साथ ही 19 वाँ प्रज्ञा पुराण की रचना भी की ।
- **3000 से अधिक पुस्तकों के लेखक :** मनुष्य को देवता समान, घर-परिवार को स्वर्ग, समाज को सभ्य और समग्र विश्वराष्ट्र को श्रेष्ठ बनाने मे समर्थ हजारों पुस्तकें लिखकर समयानुकूल समर्थ मार्गदर्शन प्रदान किया ।

- **युग-निर्माण योजना के सूत्रधार :** जिन्होंने शतसूत्री युग निर्माण योजना बनाकर नये युग की आधार शिला रखी ।
- **वैज्ञानिक-अध्यात्मवाद के प्रणेता** : जिन्हों ने धर्म और विज्ञान के समन्वय की प्रथम प्रयोगशाला 'ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान' स्थापित कर सिद्ध किया कि "धर्म और विज्ञान विरोधी नहीं, पुरक है "।
- **'२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' के उद्घोषक** : जिन्हों ने '२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' का नारा दिया तथा युग विभीषिकाओं से भयग्रस्त मनुष्यता को नये युग के आगमन का संदेश दिया ।
- **स्वतंत्रता संग्राम के कर्मठ सैनानी** : जिन्हों ने महात्मा गाँधी, मदन मोहन मालवीय, गुरुवर रविन्द्रनाथ टैगोर के साथ राष्ट्र की स्वाधीनता के लिए संघर्ष किया एवं स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी "श्रीराम मत्त" के रुप में प्रख्यात हुए ।
- **गायत्री के सिद्ध साधक** : जिन्हों ने गायत्री और यज्ञ को रुढियों और पाखण्ड से मुक्त कर जन-जन की उपासना का आधार तथा सद्बुद्धि एवं सतकर्म जागरण का माध्यम बनाया ।
- **तपस्वी** : जिन्होंने गायत्री की कठोरतम साधना कर २४-२४ लाख के २४ महापुरश्चरण २४ वर्षो में सम्पन्न किया । प्रकृति प्रकोप को शांत कर अनिष्टों को टाला, सृजन सम्भावनाओं को साकार किया ।
- **अखिल विश्व गायत्री परिवार के जनक** : जिन्हों ने अपने जीवनकाल में ही अपने साथ करोडों लोगों को आत्मियता के सूत्र में बाँधकर विश्व व्यापी 'युग निर्माण परिवार' - 'गायत्री परिवार' का गठन किया ।
- **समाज सुधारक** : जिन्हों ने नारी जागरण, व्यसन मुक्ति, आदर्श विवाह, जाति-पाँति प्रथा तथा परंपरागत रुढियों की समाप्ति हेतु अद्भूत प्रयास किए एवं एक आदर्श स्वरुप समाज में प्रस्तुत किया ।
- **ऋषि परम्परा के उद्धारक** : जिन्हों ने इस युग में महान ऋषियों की महान परंपराओं की पुनर्स्थापना की । लुप्तप्राय संस्कार परंपरा को पुनर्जीवित कर जन-जन को अवगत कराया ।
- **अवतारी चेतना** : जिन्होंने "धरती पर स्वर्ग के अवतरण और मनुष्य में देवत्व के जागरण" की अवतारी घोषणा को अपना जीवन लक्ष्य बनाया और चेतना का ऐसा प्रवाह चलाया कि करोंडों व्यक्ति उस ओर चल पड़े ।

गायत्री परिवार जीवन जीने कि कला के, संस्कृति के आदर्श सिद्धांतों के आधार पर परिवार,समाज,राष्ट्र युग निर्माण करने वाले व्यक्तियों का संघ है। **वसुधैवकुटुम्बकम्** की मान्यता के आदर्श का अनुकरण करते हुये हमारी प्राचीन ऋषि परम्परा का विस्तार करने वाला समूह है गायत्री परिवार। एक संत, सुधारक, लेखक, दार्शनिक, आध्यात्मिक मार्गदर्शक और दूरदर्शी युगऋषि पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा स्थापित यह मिशन युग के परिवर्तन के लिए एक जन आंदोलन के रूप में उभरा है।

Free Download Complete Work Of Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya, Founder of All World Gayatri Pariwar Books, Magazines, Articles, Stories, Poems, Great Personalities and many more at
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org